नईदुनिया

भारत, अमेरिका और 24 देशों के साथ ग्लोबल 6 जी टेलीकम्युनिकेशन नेटवर्क अलायंस में शामिल

वाशिंगटन

संयुक्त राज्य अमेरिका के वाणिज्य विभाग ने कहा कि भारत अगली पीढ़ी के 6 जी टेलीकम्युनिकेशन नेटवर्क के विकास की वैश्विक पहल में अमेरिका और 24 अन्य देशों के अलायंस में शामिल हो गया है। इसके अलावा अमेरिका के वाणिज्य सचिव हावर्ड लटनिक ने जी 20 इनोवेशन मिनिस्टीरियल के दौरान भारत के वाणिज्य राज्यमंत्री जितिन प्रसाद से मुलाकात कर 6जी के भविष्य पर चर्चा की।

अमेरिका के वाणिज्य विभाग ने एक्स पर कहा, हमें यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि भारत, अमेरिका और 24 अन्य देशों के साथ उस कोशिश में शामिल हो गया है जिसका मकसद यह पक्का करना है कि अगली पीढ़ी के नेटवर्क हमारी साझा सुरक्षा जरूरतों को पूरा करें। हमारी प्रतिस्पर्धात्मकता को मजबूत करें और 6जी में इनोवेशन को बढ़ावा दें।

वाणिज्य विभाग ने एक्स पोस्ट में कहा कि यह समझौता जी 20 इनोवेशन मिनिस्टीरियल के दौरान वाणिज्य सचिव हावर्ड लटनिक और केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग राज्यमंत्री जितिन प्रसाद के बीच हुई द्विपक्षीय बैठक के बाद तय हुआ। विभाग ने लिखा, लिखा, लटनिक ने जी20 इनोवेशन मिनिस्टीरियल के दौरान भारत के वाणिज्य राज्यमंत्री जितिन प्रसाद से 6जी के भविष्य पर चर्चा करने के लिए मुलाकात की।

अमेरिकी वाणिज्य विभाग ने कहा कि हमें यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि भारत, अमेरिका और 24 अन्य देशों के साथ इस प्रयास में शामिल हो गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अगली पीढ़ी के नेटवर्क हमारी साझा सुरक्षा प्राथमिकता को दर्शाए। हमारी प्रतिस्पर्धा को मजबूत करे और 6जी में इनोवेशन को बढ़ावा दें। उल्लेखनीय है कि भारत के केंद्रीय राज्यमंत्री जितिन प्रसाद ने चैपल हिल, नार्थ कैरोलिना (अमेरिका) में एक और दो सितंबर को आयोजित जी 20 इनोवेशन मिनिस्टर्स की बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। इस बैठक की मेजबानी अमेरिकी वाणिज्य विभाग और व्हाइट हाउस कार्यालय के साइंस एंड टेक्नोलाजी पालिसी (ओएसटीपी) ने की।

लटनिक के साथ हुई बैठक का जिक्र करते हुए प्रसाद ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा कि बातचीत का मुख्य केंद्र आधुनिक टेक्नोलाजी के क्षेत्र की नींव रखने वाले अहम सेक्टर्स को आगे बढ़ाना था।

न्यूज ब्रीफ

इंडोनेशिया में ज्वालामुखी की राख से प्रभावित दो दिन से बंद पांच हवाई अड्डों से उड़ानें शुरू

जकार्ता (इंडोनेशिया)। इंडोनेशिया ने अनाक क्राकाटाऊ ज्वालामुखी विस्फोट से निकली राख के कारण प्रभावित पांच हवाई अड्डों को फिर से खोल दिया। हवाई अड्डों को दो दिन तक बंद रखना पड़ा, जिससे करीब 3,000 उड़ानें प्रभावित हुईं। परिवहनमंत्री डूडी पुरवागांधी ने इसकी पुष्टि की। सरकार ने स्थिति में सुधार का दावा किया है। बावजूद इसके तीन अन्य हवाई अड्डे स्थानीय समयानुसार सुबह 10 बजे तक बंद थे। इंडोनेशिया की सरकारी न्यूज एजेंसी अंतारा की रिपोर्ट के अनुसार, परिवहनमंत्री डूडी पुरवागांधी ने कहा कि सुकर्णो-हट्टा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, हलीम पेरदानकुसुमा हवाई अड्डा, पश्चिम जावा के बांडुंग शहर स्थित हुसैन सास्त्रानेगारा हवाई अड्डा और बांतन प्रांत के दो छोटे हवाई अड्डों को आधी रात के कुछ देर बाद फिर खोल दिया गया। पुरवागांधी ने कहा, हम एहतियाती रुख अपना रहे हैं क्योंकि हवा की दिशा बहुत तेजी से बदल रही है। हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि ज्वालामुखी की राख अनाक क्राकाटाऊ के आसपास के हवाई अड्डों से दूर चली गई हो। हवाई अड्डे बंद रहने से करीब 2,961 उड़ानें प्रभावित हुईं, जिनमें 622 अंतरराष्ट्रीय उड़ानें शामिल है। इससे करीब 3,41,000 यात्रियों को परेशानी हुई। पुरवागांधी ने कहा कि प्रभावित हवाई अड्डों और आसपास के एयर स्पेस की सुरक्षा जांच के बाद कामकाज फिर से शुरू हुआ। पुरवागांधी ने कहा कि ताजा जानकारी के मुताबिक, अनाक क्राकाटाऊ ज्वालामुखी की राख लगभग 15,000 फीट की ऊंचाई पर देखी गई।

चूहे ऊंचाई से गिरने के बाद भी यूं ही नहीं बच जाते हैं जीवित

लंदन। क्या आप जानते है, चूहे जैसे छोटे जीव कई सौ फीट की ऊंचाई से गिरने के बाद भी जीवित रह सकते हैं, वहीं एक इंसान कुछ फीट की ऊंचाई से गिरकर भी गंभीर रुप से घायल हो जाता है। आखिर इसके पीछे का विज्ञान क्या है। आम धारणा होती है कि किसी जीव का वजन जितना अधिक होगा, गुरुत्वाकर्षण उसे उतनी ही ताकत से नीचे खींचेगा और गिरने पर चोट भी उतनी ही गंभीर होगी। हालांकि विज्ञान के अनुसार गिरने के दौरान केवल गुरुत्वाकर्षण ही महत्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि जीव के आकार और हवा के प्रतिरोध की भी बड़ी भूमिका होती है। भौतिक विज्ञान के अनुसार जब कोई वस्तु नीचे गिरती है तो उस पर मुख्य रूप से दो बल काम करते हैं। पहला गुरुत्वाकर्षण, जो वस्तु को नीचे खींचता है और दूसरा वायु प्रतिरोध, जो उसकी गति को कम करता है। गिरना शुरू करते समय गुरुत्वाकर्षण का प्रभाव अधिक होता है, लेकिन जैसे-जैसे वस्तु की गति बढ़ती है, हवा का प्रतिरोध भी बढ़ता जाता है। एक स्थिति ऐसी आती है जब नीचे खींचने वाला बल और हवा का प्रतिरोध संतुलित हो जाते हैं। इस स्थिति में वस्तु एक निश्चित अधिकतम गति से गिरती है, जिसे टर्मिनल वेग कहा जाता है।

पति ने कराई पत्नी की जासूसी, मिला मुआवजा, फिर खानी पडी जेल की हवा

ताइपे। एक पति ने अपनी पत्नी के कथित विवाहेतर संबंध का सबूत जुटाने के लिए रोबोट वैक्यूम क्लीनर में लगे कैमरे का इस्तेमाल किया लेकिन इसी रिकार्डिंग की वजह से पति को जेल की हवा खाना पड गई। पति द्वारा रिकार्ड किए गए वीडियो को उसने अदालत में सबूत के तौर पर अदालत में पेश किया, जिसके आधार पर उसे मुआवजा भी मिला। हालांकि, बाद में पत्नी की निजी गतिविधियों की बिना अनुमति रिकार्डिंग करने के मामले में उसी पति को दोषी ठहराते हुए जेल की सजा सुना दी गई। मामला वर्ष 2021 में शादी करने वाले एक दंपति से जुड़ा है। वर्ष 2023 में पति को पत्नी के किसी दूसरे व्यक्ति के साथ संबंध होने का शक हुआ। उसे अपने गेस्ट हाउस में एक अज्ञात व्यक्ति का टूथब्रश और कुछ अन्य सामान मिला। इसके बाद उसने सीसीटीवी फुटेज की जांच की, जिसमें पत्नी को एक अन्य पुरुष के साथ आते-जाते देखा गया। इसके बाद उसका संदेह और गहरा हो गया। पति ने पत्नी की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए अपने घर में कैमरे वाला रोबोट वैक्यूम क्लीनर रखा।

कीव और मास्को के बीच मध्यस्थता की नई बिसात

कीव

अमेरिकी दूतों स्टीव विटकाफ और जेरेड कुशनर की हालिया कूटनीतिक शटल कूटनीति ने रूस-यूक्रेन युद्ध के मोर्चे पर एक नया और दिलचस्प अध्याय खोल दिया है। यह सिर्फ युद्ध रोकने की कवायद नहीं, बल्कि वैश्विक ऊर्जा, भू-राजनीतिक समीकरणों और सर्दियों की चुनौतियों से निपटने का एक बड़ा रणनीतिक खेल बन चुका है। इस पूरी बातचीत का सबसे अहम और नया एंगल पारंपरिक सैन्य मदद से हटकर ऊर्जा सुरक्षा पर केंद्रित हो गया है।

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने जिस तरह अमेरिकी एलएनजी (तरलीकृत प्राकृतिक गैस) और वायु रक्षा प्रणालियों पर जोर दिया है, उससे साफ है कि यूक्रेन इस बार सर्दियों को केवल सैन्य मोर्चे पर नहीं, बल्कि आर्थिक और बुनियादी ढांचे के बचाव के रूप में लड़ रहा है। रूस के लगातार हमलों से त्रस्त यूक्रेनी ग्रिड को बचाना अब अमेरिकी मध्यस्थों के एजेंडे में सबसे ऊपर है, ताकि युद्ध के मैदान के साथ-साथ मानवीय संकट को भी थामा जा सके।

यह पहली बार नहीं है जब पर्दे के पीछे की बातचीत चर्चा में आई हो। इससे पहले अबू धाबी और जिनेवा में हुई बैठकों के बेपटरी होने के बाद, अब मास्को (पुतिन के साथ) और कीव (जेलेंस्की के साथ) दोनों राजधानियों का एक ही दौरे में दौरा करना अमेरिकी दूतों की गंभीर मंशा को दिखाता है। क्रेमलिन के वरिष्ठ अधिकारी यूरी उशाकोव द्वारा पुतिन और अमेरिकी दूतों की तीन घंटे से अधिक चली बैठक को रचनात्मक बताना इस बात का संकेत है कि रूस भी अब कूटनीतिक चैनल पूरी तरह बंद नहीं करना चाहता। कीव की इस बैठक में ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी के प्रतिनिधियों की मौजूदगी इस बात की गवाही देती है कि अब शांति वार्ता केवल अमेरिका और रूस के बीच का द्विपक्षीय मामला नहीं रह गया है। यूरोपीय शक्तियों को इस लूप में रखना यह सुनिश्चित करने की कोशिश है कि भविष्य में अगर कोई शांति समझौता होता है, तो यूक्रेन की आर्थिक और क्षेत्रीय गारंटी केवल कागजों तक सीमित न रहे, बल्कि पूरे पश्चिमी गठबंधन की मुहर के साथ लागू हो। यह घटनाक्रम एक ऐसे मोड़ पर आया है जहां दोनों पक्ष (रूस अपनी सैन्य बढ़त के साथ और यूक्रेन अपनी पश्चिमी मदद की उम्मीद के साथ) थकने लगे हैं। अमेरिकी दूतों की यह मध्यस्थता इस बात का इम्तिहान है कि क्या कूटनीति के जरिए युद्ध के मैदान की तोपों को खामोश किया जा सकता है या यह केवल सर्दियों के महीनों में वक्त काटने की एक रणनीतिक चाल है। आने वाले दिनों में त्रिपक्षीय वार्ता की घोषणा ही तय करेगी कि यह नया ऐंगल शांति की मंजिल तक पहुंचता है या कूटनीतिक पन्नों में ही सिमट कर रह जाता है।

कुछ ही हफ्तों बाद गायब हो गया तैरता द्वीप, लोग हैरान

टोरंटो। कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया में विलिस्टन रिजर्वायर के पानी पर एक विशाल भू-भाग अचानक दिखाई दिया। सबसे हैरानी की बात यह रही कि कुछ ही हफ्तों बाद वही तैरता द्वीप सैटेलाइट तस्वीरों से गायब हो गया। इस अजीबोगरीब नजारे की तस्वीर सबसे पहले एक स्थानीय नाविक ने खींची थी। तस्वीरें सामने आने के बाद इलाके के लोगों में उत्सुकता बढ़ गई। देखते ही देखते मामला सोशल मीडिया तक पहुंच गया और पोस्ट को हजारों लोगों ने देखा। शुरुआत में तो अधिकारियों को भी यकीन नहीं हुआ कि तस्वीर में दिख रहा यह विशाल टुकड़ा वास्तव में पानी पर तैर रहा है। यहां तक कि एआई से बनी तस्वीर होने की संभावना को भी जांचा गया। लेकिन सैटेलाइट तस्वीरों ने सारे संदेह दूर कर दिए। बीसी हायड्रो ने 20-21 जुलाई की तस्वीरों में इस तैरते भू-भाग की मौजूदगी की पुष्टि की। इसका आकार करीब 70 मीटर चौड़ा और 140 मीटर लंबा था, यानी लगभग 9,800 वर्ग मीटर - करीब दो एनएफएल फुटबाल मैदानों जितना बड़ा। यह फिनले बे के पश्चिम में, डब्ल्यूएसी बेनेट डेम से लगभग 60 मील दूर रिजर्वायर के मुख्य हिस्से में दिखाई दिया था। हालांकि बीसी हायड्रो के पास इसके बनने की एक संभावित वजह है। अधिकारियों के मुताबिक, वर्षों से किनारे पर जमा लकड़ियां और जैविक मलबा धीरे-धीरे सड़ते गए होंगे। इसी पर पौधों और पेड़ों की जड़ें फैलती गईं और समय के साथ एक विशाल तैरता हुआ ढांचा बन गया। जलस्तर बढ़ने पर यह किनारे से टूटकर अलग हुआ और खुले पानी में बह निकला होगा। लेकिन इसके गायब होने की कहानी अभी पूरी तरह साफ नहीं है। अधिकारियों का कहना है कि जरूरी नहीं कि यह डूब गया हो। संभव है कि यह किसी शांत या सुरक्षित हिस्से की तरफ बहकर चला गया हो, जहां उपलब्ध सैटेलाइट तस्वीरों में नजर नहीं आ रहा। इसके टूटने, डूबने या किसी दूसरे हिस्से में पहुंच जाने की संभावनाएं भी बनी हुई हैं। बीसी हायड्रो इस पर नजर रख रहा है। फिलहाल कनाडा की इस विशाल झील का वह चलता-फिरता जंगल एक अनसुलझी पहेली बना हुआ है।

अमेरिका में भागवताचार्य कृष्णचन्द्र शास्त्री ने समझाया ईश्वरीय भक्ति का मर्म

लास एंजिल्स (अमेरिका)

कनाडा और अमेरिका के एक माह के दौरे पहुंचे भारत के प्रमुख भागवत कथावाचक ठाकुर पंडित कृष्णचन्द्र शास्त्री ने यहां कहा कि आनंद सर्वोच्च ईश्वरीय भक्ति है। इसका कोई विकल्प नहीं है। इसके लिए मनुष्य का प्रत्येक अवस्था में आनंदित रहना जरूरी है। उन्होंने कहा कि इस समय भक्तिकाल चल रहा है। देश-विदेश में इन दिनों कथावाचकों की सभाओं में हजारों-लाखों भक्त आ रहे हैं। संतों को सुन रहे हैं।

अमेरिका में रह रहे भारतीय मूल के वरिष्ठ पत्रकार ललित मोहन बंसल की रिपोर्ट के अनुसार, लास एंजिल्स की भागवत कथा में शास्त्री ने कहा कि प्रवासी भारतीय कथा के प्रश्नों और उत्तर पर मनन कर रहे हैं। इस संदर्भ में उन्होंने विशेषकर कनाडा और अमेरिका की चर्चा की। उनका कहना है कि कनाडा और अमेरिका की सभाओं में हजारों लोग कथा सुनने आ रहे है। वह चार सितंबर को न्यू जर्सी में थे , जहां एक विशाल वेद मंदिर में हजारों लोग उमड़ पड़े। उन्होंने भारत में बिहार के आरा जिले की भागवत कथा का भी उदाहरण दिया, जहां लाखों लोग पहुंचे।

कनाडा और अमेरिका की तीस दिवसीय यात्रा के अपने दूसरे पड़ाव में यहां ठाकुर कृष्णचंद्र ने लास एंजिल्स के पासाडेना हिंदू मंदिर में दिन भर बरसात के बावजूद पहले दिन की भागवत कथा पूरी की। उन्होंने कहा कि आनंद वस्तुत: ईश्वरीय आनंद है। उन्होंने कहा कि खानपान और भांति-भांति के व्यंजनों का सेवन जिव्हा का स्वाद मात्र है। परमात्मा सर्वत्र है। मनुष्य को मनसा, वाचा और कर्म से होने वाले पाप से बचना चाहिए।

उन्होंने पाप से बचने की सलाह देते हुए कहा कि पाप की सजा भुगतने से बच पाना मुश्किल है। दिनभर की बरसात के बावजूद मंदिर में ठाकुर जी की कथा सुनने के लिए सैकड़ों सनातनी मौजूद रहे। मंदिर के पदाधिकारियों में डाक्टर निर्मल कुमार, डाक्टर मंजू कुमार, सुश्री रीमा, श्री ओझा और मंदिर के पुजारी जगदीश राजगौर ने पूरे आदरभाव से ठाकुर कृष्ण चन्द्र की आरती उतारी। इससे पूर्व भारतीय परिधान में 21 महिलाओं ने कलश यात्रा निकाली। कलश यात्रा की ठाकुर कृष्णचंद्र ने अगुआई की। उन्होंने निर्माणाधीन पासाडेना हिंदू मंदिर निर्माण में अधिकाधिक सहयोग देने की अपील भी की।

भारत के नक्शे में गिलगित-बाल्टिस्तान, टेंशन में आ गया पाकिस्तान

इस्लामाबाद। अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच चल रहे तनाव के बीच, अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड (एसीबी) द्वारा जारी एक प्रमोशनल वीडियो ने पाकिस्तान को बुरी तरह भड़का दिया है। भारत के साथ आगामी क्रिकेट सीरीज के लिए बनाए गए इस वीडियो में एसीबी ने गिलगित-बाल्टिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) को भारत का अभिन्न अंग दिखाया है। जब एसीबी ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर यह वीडियो साझा किया, तो पाकिस्तान की ओर से कड़ी प्रतिक्रिया आई। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने इस वीडियो पर गंभीर आपत्ति जताई है, जिससे दोनों देशों के पहले से ही जटिल संबंध और तनावपूर्ण हो गए हैं। एसीबी के इस कदम से पाकिस्तान इतना परेशान है कि वह इस मामले को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उठाने की संभावना पर विचार कर रहा है, हालांकि अभी तक इस संबंध में कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है। गौरतलब है कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच पिछले कुछ समय से सीमा विवाद को लेकर कई बार झड़पें और गोलीबारी हुई हैं। पाकिस्तान अक्सर आरोप लगाता रहा है कि तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) अफगानिस्तान के समर्थन से हमले करता है और आतंकवाद के लिए पड़ोसी देश को जिम्मेदार ठहराता है।

इजरायल के खिलाफ कई मोर्चों से दबाव बनाने की तैयारी

तेहरान

मध्य पूर्व में भू-राजनीतिक समीकरणों के बीच, इजरायल को लेकर ईरान की संभावित नई रणनीतिक चालों पर गंभीर चिंताएं बढ़ रही हैं। इजरायली आकलनों और विभिन्न विश्लेषकों द्वारा सामने आई रिपोर्टों में दावा किया जा रहा है कि ईरान अपने क्षेत्रीय सहयोगी संगठनों के बीच समन्वय और तालमेल को मजबूत करने की दिशा में सक्रिय है। इस संभावित रणनीति का मुख्य उद्देश्य एक ऐसी क्षमता विकसित करना है, जिसके तहत आवश्यकता पड़ने पर इजरायल के खिलाफ कई दिशाओं से एक साथ दबाव बनाया जा सके। यह एक जटिल और बहु-मोर्चाई चुनौती खड़ी करने की योजना प्रतीत होती है, हालांकि इस बात पर अभी भी स्पष्टता नहीं है कि क्या ईरान ने वास्तव में 7 अक्टूबर 2023 जैसे किसी बड़े समन्वित हमले को अंजाम देने का फैसला कर लिया है।

रिपोर्टों के अनुसार, इस संभावित नेटवर्क में लेबनान का शक्तिशाली हिजबुल्लाह, गाजा पट्टी में सक्रिय हमास, यमन के हूती विद्रोही और इराक में ईरान-समर्थित विभिन्न मिलिशिया समूह शामिल हो सकते हैं। रणनीति का लक्ष्य इन सभी क्षेत्रीय मोर्चों - उत्तर, दक्षिण और अन्य संभावित दिशाओं - को एक साथ सक्रिय करने की क्षमता तैयार करना है। यदि यह रणनीति सफल होती है, तो इजरायल को अपनी सुरक्षा के लिए एक साथ कई सीमाओं और दिशाओं से आने वाली

चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उसकी सैन्य और रक्षा प्रणालियों पर अभूतपूर्व दबाव पड़ने की आशंका है।

7 अक्टूबर 2023 को हमास द्वारा इजरायल पर किए गए अचानक और बड़े हमले के बाद हिजबुल्लाह ने इजरायल की उत्तरी सीमा पर भी हमले शुरू किए थे। हालांकि, इन दोनों मोर्चों के बीच उस स्तर का समन्वय स्पष्ट नहीं था, जो किसी व्यापक क्षेत्रीय हमले के लिए रणनीतिक रूप से आवश्यक होता। अमेरिकी और इजरायली आकलनों ने संकेत दिया था कि ईरान और हिजबुल्लाह को हमास की पूरी योजना और हमले की सटीक तारीख की पहले से पूरी जानकारी नहीं थी। माना जा रहा है कि ईरान अब इसी कमी को दूर करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, ताकि भविष्य में होने वाले किसी भी आपरेशन में अधिक प्रभावी समन्वय स्थापित किया जा सके। इस संदर्भ में, हमास के नेतृत्व में हुए हालिया बदलाव को भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। जुलाई में खलील अल-हय्या को हमास का शीर्ष नेता चुने जाने के बाद संगठन और ईरान के बीच संबंधों को लेकर चर्चा तेज हुई है, क्योंकि अल-हय्या के ईरान के साथ करीबी संबंध बताए जाते हैं। ईरान लंबे समय से अपने सहयोगी संगठनों के नेटवर्क को प्रतिरोध की धुरी के रूप में समर्थन देता रहा है, और अब इस नेटवर्क के बीच संपर्क और सैन्य तालमेल को फिर से मजबूत करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

9/11 हमले पर 25 साल बाद सनसनीखेज खुलासा, सऊदी कनेक्शन पर गहराए सवाल

वाशिंगटन

अमेरिका पर 11 सितंबर 2001 को हुए आतंकवादी हमले के 25 साल बाद अब एक रिपोर्ट में इसे लेकर बड़े खुलासे हुए हैं। हमले से जुड़े संदिग्ध उमर अल-बायौमी के सऊदी सरकार के अधिकारियों और अल-कायदा के आतंकी अनवर अल-अवलाकी के साथ संबंधों की पुष्टि करने वाले नए वीडियो सामने आए हैं। ये सनसनीखेज खुलासे एक जांच रिपोर्ट में हुए हैं। ये वीडियो और अन्य दस्तावेज अमेरिका में 9/11 पीड़ित परिवारों की ओर से सऊदी अरब के खिलाफ दायर करीब 1 ट्रिलियन डालर के मुकदमे के दौरान सार्वजनिक हुए।

पीड़ित परिवारों का आरोप है कि बायौमी ने पेंटागन पर हमला करने वाले दो किडनैपर्स की मदद की थी। हालांकि, सऊदी अरब और बायौमी दोनों ने इन आरोपों से लगातार इनकार किया है।

सऊदी अरब से 1994 में सैन डिएगो पहुंचे बायौमी ने दावा किया था कि वह यहां अंग्रेजी पढ़ने आया था, लेकिन वह यहां कई तरह की संदिग्ध गतिविधियों में शामिल हो गया था। 1997 या 1998 की फुटेज में बायौमी को अल-कायदा के नेता अनवर अल-अवलाकी और सऊदी इस्लामिक मामलों के मंत्रालय के एक अधिकारी के साथ पेंटबाल खेलते देखा जा सकता है। फुटेज में कुछ लोग सैन्य वर्दी जैसे कपड़े पहने दिख रहे हैं और अल्लाहू अकबर के नारे भी लगा रहे हैं। अधिकारियों ने बताया है कि इन सत्रों का इस्तेमाल जिहादी ट्रेनिंग के लिए किया जाता

था। इस बीच, 1998 के एक अन्य वीडियो में बायौमी और अवलाकी को गले मिलते हुए भी देखा जा सकता है। इस वीडियो ने बायौमी के उस दावे को झूठा साबित कर दिया है, जिसमें उसने पहले अवलाकी से मिलने से जुड़े आरोपों को खारिज कर दिया था। यह सीधा सबूत बायौमी के अल-कायदा से गहरे संबंध की ओर इशारा करता है।

गौरतलब है कि 9/11 हमले के दो किडनैपर्स नवाफ अल-हजमी और खालिद अल-मिहधार के घर से मिले दस्तावेजों में नाम आने के बाद बायौमी एफबीआई का संदिग्ध बना था। 21 सितंबर 2001 को ब्रिटिश पुलिस ने बायौमी को बर्मिंघम से गिरफ्तार किया। उसके पास से 80 से ज्यादा वीडियो टेप और दस्तावेज मिले। इन दस्तावेजों में एक हाथ से बना विमान का चित्र और लक्ष्य से उसकी दूरी और ऊंचाई का हिसाब लिखा एक पन्ना भी शामिल था।

पीड़ितों के वकीलों और अमेरिकी जज ने माना कि यह दस्तावेज दिखाता है कि बायौमी को 9/11 हमलों की पहले से जानकारी थी, जिससे उसकी भूमिका और भी संदिग्ध हो जाती है। सवाल यह उठता है कि इतने ठोस सबूतों के बावजूद जांच क्यों अटकी जांच एजेंसियों के बीच आपसी तालमेल की कमी के कारण मामला आगे नहीं बढ़ सका। ब्रिटेन में बरामद यह नक्शा और वीडियो लंदन में पूछताछ कर रहे अधिकारियों और सैन डिएगो में मौजूद मुख्य एफबीआई टीम के साथ समय पर साझा ही नहीं किया गया।